विघ्न-विनाशक बनो

विघ्न आने के कारण और निवारण

१. यज्ञ मे सबसे बडा विघ्न है बच्चो का 'मै पन' और 'मेरा पन'। मैने यह किया, मै ही यह कर सकता हूँ.... यह मै पन आना -इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान और दूसरा मेरा पन अर्थात् मेरा शरीर, मेरा सम्बन्ध -यह मेरापन भी बहुत विघ्न डालता है।

२. अपने पुराने स्वभाव और सस्कार, जो कभी-कभी नये जीवन मे इमर्ज हो जाते है। अपना कमजोर सस्कार दूसरे के सस्कार से टक्कर खाता है। यह कमजोरी विशेष लक्ष्य तक पहुँचने मे विघ्न डालती है। फूल पास के बजाये पास मार्क दिला देती है।

३. सर्विस मे कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टेन्शन आने का कारण है -स्वय और सेवा का बैलेन्स नही, स्वय का अटेन्शन कम हो जाने के कारण सर्विस मे कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टेन्शन पैदा हो जाता है। मर्यादा की लकीर से बाहर निकलकर सेवा करते हो, धारणोओ पर पूरा अटेन्शन नही है तो बहुत विघ्न पडते है।

४. आपस मे जो व्यर्थ समाचारो की लेन-देन चलती है, यह आदत जो बढती जा रही है यही तपस्या मे बहुत बडा विघ्न है। हर एक समझे कि इस हॉबी को स्वय मे समाप्त करने की मै जिम्मेवारी लूँ तब विघ्न विनाशक कहे जायेगे।

५. यदि कोई भी बात मे किसी भी प्रकार की जरा भी फीलिग आती है यह क्यो, यह क्या.... तो फीलिग आना माना विघ्न रूप बनना। सदैव यह सोचो कि व्यर्थ फीलिग से परे, फीलिग-प्रूफ आत्मा हूँ। तो मायाजीत, विघ्नजीत बन जायेगे।

६. ६३ जन्मो के विस्मृति के सस्कार वा कमजोरी के सस्कार ब्राह्मण जीवन में कहाँ-कहाँ मूल नेचर बन पुरूषार्थ मे विघ्न डालते है, इसलिए स्मृति स्वरूप बनो।

७. छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्न रूप बनते है। इसलिए अपनी सूक्ष्म चेकिग कर उन पापो से मुक्त बनो। ऐसे नही सोचो कि यह तो सभो करते है, यह तो आजकल चलता ही है। मैने तो यह बात हसी मे कही, मेरा तो कोई भाव नही था, ऐसे ही बोल दिया.... यह भी सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होने में सूक्ष्म विघ्न है। इसे चेक करो और चेज करो।

८. किसी भी विघ्न को चेक करो तो उसका मूल कारण प्रीत के बजाए विपरीत भावनाये ही होती है। भावना पहले संकल्प रूप मै होती है, फिर बोल में आती है और उसके बाद फिर कर्म में आती है। जैसी भावना होगी, वैसा व्यक्तियो के हर एक चलन वा बोल को उसी भाव से देखेगे, सुनेगे वा सम्बन्ध में आयेगे। भावना से भाव भी बदलता है। अगर किसी आत्मा के प्रति किसी भी समय ईर्ष्या की भावना है अर्थात् अपनेपन की भावना नही है तो उस व्यक्ति के हर चलन, हर बोल से मिस अन्डरस्टैण्ड का भाव अनुभव होगा और वही विघ्नो का कारण बन जायेगा। इसलिए अपनी श्रेष्ठ भावनाओ से विघ्न विनाशक बनो।

९. सर्विस मे विघ्न डालने वाली तीन बाते है १-बहाना देना २-कहलाना और ३-सर्विस करते मुरझा जाना।

१०. जब आपकी कथनी और करनी एक नही रहती। कहने और करने में अन्तर हो जाता है तब विघ्न पडते है। यदि कहते हो कि यह विकार बुरी चीज है, औरो को भी सुनाते हो लेकिन खुद घर गृहस्थी से न्यारे होकर नही चलते हो तो विघ्न पडते है इसलिए जो कहते हो वही करो।

११. जो व्यर्थ सकल्प और स्थिति में स्थित होने मे विघ्न है। विकल्प चलते है, वे अव्यक्त इसी कारण बार-बार शरीर की आकर्षण मे आ जाते हो, इसका भी मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नही है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमे बुद्धि मगन न होने के कारण अनेक विघ्न आते है।

१२. जो अव्यक्त स्थिति के अनुभव से आये वह शुरू से ही निर्विघ्न चल रहे है। लेकिन यदि अव्यक्त स्थिति का फाउन्डेशन मजबूत नही है, किसी दूसरे आधार पर चल रहे है तो उनके सामने अनक विघ्न, मुश्किलाते आती है जिससे पुरूषार्थ कठिन लगता है।

१३. पुरूषार्थ मे अथवा सम्पूर्ण होने में विशेष व्यर्थ सकल्प ही विघ्न रूप बन रूकावट डालते है। इससे बचने के लिये, एक तो - कभी अन्दर की वा बाहर की रेस्ट न लो। अगर रेस्ट मे नही होगे तो वेस्ट नही जायेगा और दूसरी बात अपने को सदैव गेस्ट समझो।

१४. कम्पलीट बनने में व्यर्थ सकल्पो के तूफान विघ्न डालते है, इसका कारण है कि मन को हर समय बिजी नही रखते हो। इसके लिए समय की बुकिग करने का तरीका सीखो। इस कम्पलेन को समाप्त करने के लिए रोज अमृतवेले सारे दिन के लिए अपॉइन्टमेट की डायरी बनाओ।

१५. घर में रहते यदि अपने शक्ति स्वरूप की स्मृति नही रहती है तो कर्म-बन्धन विघ्न डालते है। फिर यह आवाज निकलता हे कि क्या करे? कर्म-बन्धन है। इस बधन को कैसे काटे? लेकिन शक्ति स्वस्प की स्मृति विघ्नो को समाप्त कर देती है, विघ्नो मे चिल्लाने वा घबराने क बजाए शक्ति रूप बन उनका सामना करो तो विघ्न समाप्त हो जायेगे।

१६. यदि अपनी कामनाओ को पूर्ण करने के लिए पुराने सस्कारो को अपने पास रख लेते हो तो वह सस्कार ही पुरूषार्थ मे विघ्न रूप बनते है। कई बच्चे सोचते है कि सम्पूर्ण तो अन्त मे बनना है। थोडा बहुत तो रहेगा हो। जेब खर्च माफिक जरा सा कोई सस्कार अन्दर रह गया तो वह थोडा सस्कार भी धोखा दिला देता है इसलिए पुरानी जायदाद को छिपाकर नही रखो।

१७. प्रैक्टिकल दिनचर्या मे बहुत करके एक शब्द विशेष विघ्न रूप बनता है वह है रोब। और रोब आने के कारण रूहाब नही रहता है। रोब भी तब आता है जब स्वय को सेवाधारी नही समझते हो। सेवाधारी समझो तो रोब नही आयेगा।

१८. प्रवृति मे रहते कई बच्चे समझते है कि अगर थोडा रोब के सस्कार नही होगे तो प्रवृति कैसे चलेगी। लोभ के सस्कार नही होगे तो कमाई कैसे कर सकेगे वा अहकार का रूप

नही होगा तो लोगो के सामने पर्सनैलिटी कैसे देखेने में आयेगी। ऐसे थोडा बहुत पुराने सस्कारो का खजाना छिपाकर रख लेते है फिर यही सस्कार विघ्न रूप बनते है।

१९. वर्तमान प्रवृति कर्मबन्धन चुक्तू करने के लिए है, यदि चुक्तू करने वाली प्रवृति के तरफ ज्यादा अटेन्शन देते हो और अलौकिक प्रवृति तरफ कम अटेन्शन देते हो तो यह भी मोह-ममता का रॉयल रूप है। यह अश वृद्धि को पाते-पाते विघ्न रूप बन विजयी बनने मे हार खिला देता है।

२०. विघ्नो की लहर तब आती है जब रूहानियत की तरफ फोर्स कम हो जाता है। मनन शक्ति द्वारा स्वय मे सर्व शक्तिया भरने वा मगन अवस्था में स्थित नही रहते हो, इसलिए विघ्न पडते है।

२१. आलस्य का विघ्न भी पुरूषार्थ में आगे बढने नही देता है। कई बार यह जो कह देते हो कि अच्छा सोचेगे, यह कार्य करेगे, कर ही लेगे, यह आलस्य की निशानी है। इसलिए यही सोचो कि जो करना है, वह अभी करना है। भल कोई विघ्न नही है लेकिन यदि लगन भी श्रेष्ठ नही है, हुल्लास वा कोई विशेष उमग नही है तो उसे भी आलस्य ही कहेगे। यह आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरूषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा। कमजोर बना देगा, निर्बल बना देगा। फिर आने वाले विघ्नो का सामना नही कर सकेगे, इसलिए आलस्य के रूपो को पहचान कर उसका त्याग करो।

२२. जब तक लाइट और माइट से सम्पन्न नही बने हो तब तक विघ्न पडते है। यदि सिर्फ नॉलेज की लाइट है लेकिन माइट नही है तो आने वाले विघ्नो का सामना नहीं कर सकेग।

२३. जैसे हस्तो की लाइन मे अगर बीच-बीच मे लकीर कट होती है तो श्रेष्ठ भाग्य नही गिना जाता है व बडी आयु नही मानी जाती है। वैसे यहाँ भी अगर बीच-बीच मे विघ्नो के कारण बाप से जुटी हुई बुद्धि की लाइन कट होती रहती है व क्लियर नही रहती है तो बडी प्रारब्ध नही हो सकती।

२४. हर आत्मा मे भाई-भाई का भाव न रखने से, स्वभाव एक विघ्न बन जाता है।

२५. यदि माया का कोई भी कर्ज रहा हुआ होगा तो वह कर्ज, मर्ज का रूप हो जायेगा और माया बार-बार परेशान करती रहेगी। इसलिए अपने खाते को चेक करो कि कोई पुराने सकल्प व सस्कार - स्वभाव के रूप मे कर्ज रहा हुआ तो नही है? जैसे शारीरिक रोग व कर्ज बुद्धि को एकाग्रचित नहीं करने देता, न चाहते हुए भी अपनी तरफ बार-बार खीत लेता है, ऐसे ही यह मानसिक कर्ज का मर्ज बुद्धियोग को एकाग्र करने नहीं देगा। विघ्न रूप बन जायेगा।

२६. जब आराम के साधनो का एडवान्टेज (लाभ) लेते हो तो सदाकाल की प्राप्ति मे विघ्न पडता है। अगर अभी किसी भी प्रकार की सिद्धि अथवा प्राप्ति को स्वीकार किया तो वहाँ कम हो जायेया। इसलिए साधन मिलते हुए भी उसका त्याग करो। प्राप्ति होते हुए भी त्याग करना, उसको ही त्याग कहा जाता है।

२७. जो माया के अनेक प्रकार के चक्करो मे बार-बार आते है, उनके सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नो का बोझ होता है। ऐसी आत्मा सदैव कर्जदार और मर्जदार होगी उनके मस्तक पर, मुख पर, सदैव क्वेश्चन मार्क होगे। हर बात मे क्यो, क्या और कैसे, यह क्वेश्चन्स होगे। जिन सम्बन्धो के सुखो का अनुभव नही किया है, उन सम्बन्धो मे बुद्धि का लगाव जाता है और वह लगाव ही बुद्धि की लगन मे विघ्न-रूप बन जाता है। इस विघ्न को समाप्त करने के लिए सारे दिन मे भिन्न-भिन्न सम्बन्धो का अनुभव करो।

२८. विनाश होना तो चाहिए लेकिन पता नही क्या होगा, शायद हो, दो चार मास मे तो कुछ दिखाई नही देता है, सगमयुग ५० वर्ष का है या ६० वर्ष का है इसी प्रकार के सकल्प भी स्थापना के कार्य मे विघ्न डालते वाले रॉयल रूप का सशय है। जब तक यह सशय है तब तक सम्पूर्ण विजयी नही बन सकते।

२९. चाहे कोई हार्ड वर्कर है या प्लैनिग बुद्धि है लेकिन यदि उन्हे साथ लेकर नही चलते तो सेवा मे विघ्न पडते है। इसलिए लक्ष्य हो कि छोटो को भी आगे बढाना है। नही तो एक उमग - उत्साह से सर्विस करता है और दूसरे के वायब्रेशन, सफलता मे विघ्न डालते है। इसलिए हर एक को कोई-न-कोई ड्यूटी जरूर बाँटो। इससे सबके उत्साह का वायुमण्डल रहेगा।

३०. सदा स्व परिवर्तन का लक्ष्य रखो। दूसरा बदले तो मै बदलूं - नही। दूसरा बदले या न बदले मुझे बदलना है। 'हे अर्जुन' मुझे बनना है। यह जो चलते-चलते अनेक प्रकार के विघ्न पडते है या कोई व्यक्त भाव मे आ जाते है तो उसका कारण वायुमण्डल मे व्यक्त भाव है। अगर अव्यक्त वायुमण्डल हो तो कोई व्यक्त भाव की बाते लेकर भी आयेगे तो बदल जायेगे।

३१. वर्तमान समय पुरूषार्थियो के मन में यह सकल्प उठना कि अन्त मे विजयी बनेगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न विनाशक बनेगे - यह सकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है; जो सम्पूर्ण बनने मे विघ्न डालता है।

विघ्न-विनाशक बनने की विधि

१. विघ्न-विनाशक बनने के लीए नॉलेजफुल बनो। नॉलेजफुल जानता है कि यह विघ्न क्यो आया! ये विघ्न गिराने के लिए नही है लेकिन और ही मजबूत बनाने के लिये है। वह कन्फयूज नही होता है। कोई भी निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नही उठना चाहिये कि यह ऐसा क्यो करता है? ऐसा नही करना चाहिये। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। अगर क्यो, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घडी हो गई तो फेल हो जायेगे।

२. विघ्न-विनाशक बनने के लिऐ सर्व शक्ति सम्पन्न बनो। सर्वशक्तिया आपका जन्म सिध्ध अधिकार है। सदा यह नशा रखो की मै मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ और सर्वशक्तियो को समय प्रमाण कार्य मे लगाओ।

३. अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओ का हाथ अनुभव करो। जिसके उपर परमात्म- दुआओ का हाथ है, वो सदा निश्चित विजयी है ही। उनके मस्तक पर विजय का अविनाशी तिलक लगा हुआ है। विजय के तिलकधारी अर्थात् विघ्न-विनाशक।

४. स्वय म रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओ के प्रति यह लहर फैलाओ। रहम की भावना से विघ्न सहज खत्म हो जायेगे। जहाँ रहम होगा, वहाँ मेरा-तेरा की हलचल नही होगी।

५. सहन-शक्ति और समाने की शक्ति धारण करो तो स्वभाव-सस्कार के कारण जो विघ्न पडते है वे सकल्प व कर्म मे नही आयेगे और ना ही दूसरो के स्वभाव-सस्कार से टक्कर होगी।

६. विघ्न-विनाशक बनने के लिए निरन्तर योगी और निरन्तर सेवाधारी बनो। बाप की याद के बिना जीवन नही, ऐसे ही सेवा के बिना जीवन नही। बाप की याद और सेवा, जब यह डबल-लॉक लग जाता है तो विघ्न ठहर नही सकता है।

७. विघ्न-विनाशक बनने के लिए लगन की अग्नि तेज करो। यदि लगन मे कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा। लेकिन लगन की अग्नि तेज है तो विघ्न रूपी किचडा भस्म हो जायेगा। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न नही रह सकता, कर्मयोग से कर्मभोग भी परिवर्तन हो जाता है।

८. सर्व विघ्नो से, सर्व प्रकार की परिस्थितियो से या तमोगुणी प्रकृति की आपदाओ से सेकेण्ड मे विजयी बनने के लिए सिर्फ ऐक बात निश्चय और नशे म रहे 'वाह रे मै' ! मै कौन? मै श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ। दाता हूँ यही भावना सदा निर्विघ्न, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव कराती है।

९. विघ्न-विनाशक बनने के लीए सदा एक लक्ष्य की तरफ ही नजर रहे। एक लक्ष्य अर्थात् बिन्दी की तरफ सदा देखने वाले। अन्य कोई भी बातो को देखते हुऐ भी नही देखो। जैसे यादगार रूप मे भी दिखाया है कि मछली के तरफ नजर नहो थी लेकिन आँख की भी बिन्दू मे थी । तो मछली है विस्तार और सार है बिन्दू । तो विस्तार को नही देखो लेकिन सार अर्थात् एक बिन्दू को देखो।

१०. किसी भी प्रकार के विघ्न से मुक्त होने की युक्ति है डबल लाइट स्वरूप की स्थिति। यह स्थिति ही सेकन्ड मे हाई जम्प दिलाने वाली है। लेकिन हाई जम्प के बजाए पत्थर को तोडने लगते हो जिस कारण जो भी यथा शक्ति हिम्मत और हुल्लास है, वह उसी मे ही खत्म हो जाता है और थक जाते हो व दिलशिकस्त हो जाते हो। सदा बाप और प्राप्ति को सामने रखने से सब विघ्न खत्म हो जायेगे।

११. विघ्न-विनाशक बनने के लिए रूहानियत का पावरफुल वायुमण्डल बनाओ। ज्ञान-सूर्य समान बीजरूप स्टेज मे वा फरिश्ते स्वरूप मे स्थित रहने का अभ्यास करो।

१२. विशेष जब कोई विघ्न कहाँ आते है तो जैसे अन्तर्राष्ट्रीय योग रखते हो। वैसे हर मास सगठीत रूप मे चारो ओर विशेष टाइम पर एक साथ योग का प्रोग्राम रखो। पूरा जोन का जोन योगदान दो, इससे किला मजबूत होगा।

१३. विघ्न-विनाशक बनने के लीए अपना कम्बाइन्ड रूप स्मृति मे रखो। हम अकेले नही है, जहाँ बच्चे है वहाँ बाप हर बच्चे के साथ है। सदैव बाप की याद के छत्रछाया के अन्दर रहो तो किसी भी प्रकार के माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नही सकते। तो जहाँ भी रहते हो, जो भी कार्य करते हो - सदा ऐसे ही अनुभव करो कि हम सेफटी के स्थान पर है।

१४. अमृतवेले जब चारो और तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। वातावरण वृति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर विशेष रूप से ज्ञान-सूर्य की लाईट और माइट की किरणो का स्वय पर अनुभव करो। बुद्धि-रूपी कलश में शकितयो का अमृत धारण कर लो तो विघ्न समाप्त हो जायेगे

१५. कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-बनते पास विद् आनर हो जायेगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लो, क्यो-क्या मे नही जाओ।

१६. विघ्न-विनाशक बनना अर्थात् सदा बाप समान मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति में रहना। इस स्थिति मे रहेगे तो विघ्न वार कर ही नहो सकते। अगर सदा मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति मे नही रहते तो कभी विघ्न विनाशक नही बन सकते। जितना समय विघ्नो के वश हो उतना समय लाख गुणा घाटे मे जाता है।

१७. विघ्न-विनाशक बनने के लिए अनुभवो को बढाते जाओ, हर गुण के अनुभवी मूर्त बनो। जो बोलो, वह अनुभव हो। अनुभवी को कोई हिलाना भी चाहे तो हिला नही सकता। अनुभव के आगे माया की कोई भी कोशिश सफल नही होगी। अनुभवी कभी धोखा नही खाते। अनुभव का फाउन्डेशन मजबूत करो।

१८. कभी भी आपस मे रीस नही लेकिन रेस करो। माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अगद के मुआफिक जरा भी नही हिलो, जरा भी कमजोरी के सस्कार अन्दर न हो। पुराने सस्कारो से मरजीवा बनो तो विघ्न ठहर नही सकते।

१९. पढाई से दिल की प्रीत हो, जिसका पढाई से प्यार होता है वो स्वय भी बिजी रहते है और औरो को भी बिजी रख सकते है। जो सदा बिजी रहते है वह स्वय भी विघ्न विनाशक और दूसरो को भी विघ्न-विनाशक बना सकते है, इसके लिए प्लानिग बुद्धि बनो।

२०. 'बाबा' शब्द ही जादु का शब्द है। तो जैसे जादू की रिग या जादू की कोई भी चीज अपने साथ रखते है, वैसे 'बाबा' शब्द अपने साथ रखो तो कभी भी कोई विघ्न के वश नही होगे। अगर कोई बात हो भी जाए तो 'बाबा' शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेगे। बाबा-बाबा का महामन्त्र सदा स्मृति मे रखो तो ऐसे अनुभव करेगे जैसे छत्रछाया के नीचे चल रहे है।

२१. मन्सा सेवा का अभ्यास बढाओ, इससे वायुमण्डल पॉवरफुल बन जायेगा। पहले अपने स्थान का, शहर का, भारत का वायुमण्डल पावरफुल बनाओ फिर विश्व का। जो बच्चे मन्सा सेवा करना जानते है वो स्वय भी निर्विघ्न रहते है, सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न रहता है। वहाँ किसी आत्मा के विघ्न रूप बनने की हिम्मत भी नही हो सकती है।

२२. विघ्न आया उसको हटाया, यह भी टाइम वेस्ट हुआ। इसलिए किले को ऐसा मजबूत बनाओ जो विघ्न अन्दर आ ही न सके। आपस मे स्नेही, सहयोगी बनकर चलो।

२३. कमजोरियो के सस्कार-रूपी बीज को याद के लगन की अग्न मे जला दो तो विघ्नो का वृक्ष पैदा नही होगा अर्थात् मन-वाणी और कर्म मे कमजोरी नही आयेगी।

२४. स्व के प्रति और सर्व के प्रति सदा विघ्न विनाशक बनने का सहज साधन है क्वेश्चन मार्क को सदा के लिए विदाई देना और फुलस्टॉप द्वारा सर्व शक्तियो का फुलस्टॉक करना।

२५. सदा विघ्न-प्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस पहनकर रहो। मिट्टी की ड्रेस नही पहनो, साथ-साथ सर्व गुणो के गहनो से सजे रहो। विशेष ८ शक्तियो के शस्त्रो से सदा अष्ट-शक्ति शस्त्रधारी सम्पन्न मूर्ति बनकर रहो। सदा कमल पुष्प के आसन पर अपने श्रेष्ठ जीवन के पाव रखो - तब कहेगे विघ्न विनाशक आत्मा।

२६. माया शेर के रूप मे भी विघ्न लेकर सामने आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज भी वार नही कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप मे आ नही सकती है। सब विघ्न समाप्त हो जायेग।

२७. कोई भी बात यदि दिल मे आती है तो उसे सुनाने मे कोई हर्जा नही है लेकिन स्थान पर सुनाओ, नही तो समा लो। स्थान पर यदि सुनाते हो तो बडो द्वारा जो डायरेक्शन मिलता है, उसमे चलने के लिए सदा तैयार रहो। सुनाया तो आपकी जिम्मेवारी खत्म हुई फिर बडो की जिम्मेवारी हो जाती है। इसलिए सुनाकर हल्के हो जाओ, नही तो अन्दर कोई भी बात होगी तो सेवा मेव स्वकी उन्नति मे बार-बार विघ्न रूप बन जायेगी।

२८. आपका यादगार विघ्न तक पूजा जाता है। तो विघ्न विनाशक गणेश के रूप में आज विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न-विनाशक। अपने हो विघ्न विनाशक नही। अपने मे ही लगे रहेगे तो विश्व के विघ्न विनाश कब करेगे ? लेकिन कोई भी विघ्न विनाश करने के लिए शक्तियो की आवश्यकता है। अगर कोई एक भी शक्ति नही होगी तो विघ्न विनाश नही कर सकते। इसलिए सब शक्तियो से सम्पन्न बनो।

२९. 'सी फादर' करने से सदा निविघ्न रहेगे। 'सी सिस्टर' 'सी ब्रदर' करने से कोई न कोई हलचल होती है। सदा 'सी फादर'। ब्रहमा बाप ने क्या किया? सबके सस्कार बाप समान हो। यह सस्कार मिलाने की डास सीख लो तो विघ्न खत्म हो जायेगे। सस्कारो से टक्कर नही खाना है, सस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गडबड भी करे तो भी आप मिलाओ, आप गडबड नही करो और ही उसको शान्ति का सहयोग दो।

३०. विघ्न-विनाशक बनने की विधि है किसी का भी सामना करने के बजाए शान्त रहना। शान्ति से हर कार्य को सम्पन्न करो। न स्वय हलचल मे आओ, न दूसरो को हलचल मे लाओ। कई बच्चे सोचते है कि थोडा हलचल करते है तो यह अटेन्शन खिचवाते है। लेकिन ऐसे नही करना है। यह अटेन्शन नही खिचवाते लेकिन टेन्शन पैदा करते हो। इसलिए शान्ति की शक्ति को अपनाओ, इससे कितना भी बडा विघ्न सहज समाप्त हो जायेगा।

३१. विघ्न प्रूफ बनना है तो सर्व की दआये लो। पहले है -माप-पिता की दुआए और साथ मे सर्व के सम्बन्ध मे आने से सर्व द्वारा दुआए। सबसे बड़े से बडा तीव्र गति से आगे उडने का तेज यन्त्र है - 'दुआए'। जिन्हे सर्व की दुआये मिलती है उन्हे कोई भी विघ्न जरा भी स्पर्श नही कर सकता है। युद्ध नही करनी पडती है। हर कर्म, बोल और सकल्प मे सहज ही योगयुक्त, युक्तियुक्त बन जाते है।

३२. सदैव यह स्मृति मे रहे कि हम सारे विश्व के विघ्न - विनाशक है, विश्व-परिवर्तक है। विश्व-परिवर्तक शक्तिशाली होते है, उनकी शक्ति के आगे कोई कितना भी शक्तिशाली हो लेकिन वह कमजोर बन जाता है। विघ्न को कमजोर बनाने वाले हो, स्वय कमजोर बनने वाले नही। अगर स्वय कमजोर बनते हो तो विघ्न शक्तिशाली बन जाता है और स्वय शक्तिशाली हो तो विघ्न कमजोर बन जाता है। इसलिए सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिमान् स्वरूप की स्मृति मे रहो।

३३. कभी भी किसी भी प्रकार का विघ्न आता है तो स्मृति रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न विनाशक बनना। जब नाम है विघ्न विनाशक, तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेगे ना। तो ऐसे कभी नही सोचना कि हमारे पास ही यह विघ्न क्यो आता है? विघ्न आना ही है और हमे विजयी बनना ही है।

३४. बापदादा के दिलतख्त नशीन बनो तो कोई भी विघ्न वा समस्या नही आ सकती है। न प्रकृति वार कर सकती है, न माया वार कर सकती है। दिल तख्त-नशीन बनना अर्थात् सहज प्रकृतिजीत, मायाजीत बनना।

३५. पुरूषार्थ करते-करते जो माया के विघ्न आते है, उन पर विजय प्राप्त करने के लिए यही स्लोगन याद रखना कि बाप का खजाना हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। जब अपने को अधिकारी समझेगे तो माया के अधीन नही होगे। पहले सगमयुग के सुख के अधिकारी है और भविष्य में स्वर्ग के सुखो के अधिकारी है। अपना अधिकार भूलो नही। जब अपना अधिकार भूल जाते हो तब कोइ न कोई बात के अधिन होते हो और जो पर अधीन होते है, वह कभी भी सुखी नही रह सकते है।

३६. विघ्नो वा परीक्षाओ से पास होने के लिए परखने की शक्ति को बढाओ। माया किस रूप मे आ रही है और क्यो मेरे सामने यह विघ्न आया है? इसकी रिजल्ट क्या है? यह परख लो तो परीक्षाओ मे फेल नही हो सकते।

३७. विघ्नो को एक सेकेण्ड मे खत्म करना है तो सिर्फ दो अक्षर याद रखना कि जो कहते है, वो करना है। कहते है हम ब्रह्माकुमार, कुमारी है। हम बापदादा के बच्चे आज्ञाकारी है। मददगार है। जो भी बाते कहते हो वो प्रैक्टिकल करना तो विघ्न विनाशक बन जायेगे।

३८. जितना योगबल और ज्ञानबल दोनो को समानता मे लायेगे उतनी सफलता होगी, साथ-साथ सर्विस मे बिजी हो जायेगे तो विघ्न आदि सब टल जायेगे। दृढ निश्चय के आगे कोई रूकावट आ नही सकती।

३९. ड्रामा मे विघ्न तो आयेगे ही लेकिन उन्हे खत्म करने की युक्ति है - सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर करता है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नही देखना है लेकिन पेपर समझना है। पेपर मे भी भिन्न-भिन्न क्वेश्चन होते है कभो मन्सा का, कभी लोक-लाज का, कभी सम्बन्ध का, कभी देशवासियो का क्वेश्चन आयेगा। परन्तु इसमे घबराना नही है। गहराई मे जाना है।

४०. रहम की भावना से महादानी बनो तो विघ्न विनाशक बन जायेगे। सारे दिन मे चेक करो कि कितने रहमदिल बने? कितनी आत्माओ पर रहम किया? दूसरो को सुख देने से स्वय मे सुख भरता है। देना अर्थात् लेना। इससे सुख स्वरूप बन जायेगे, फिर कोई विघ्न नही आयेगे क्योकि दान करने से शक्ति मिलती है।

४१. विघ्न-विनाशक बनने के लिए बाबा-बाबा की ढाल सदैव अपने साथ रखो। इस ढाल से सब विघ्न खत्म हो जायेग। मै पन समाप्त हो जायेगा।

४२. अपने काली स्वरूप मे सदा स्थित रहो तो माया का कोई भी विघ्न सामने आने का साहस नही रख सकेगा। सर्व विघ्नो को हटाने के लिए सदैव दो बाते अपने सामने रखो - एक तरफ विनाश के नगाडे और दूसरे तरफ अपने राज्य के नजारे, दोनो ही साथ-साथ स्मृति मे रहे तो किसी भी विघ्न को सहज ही पार कर लेगे।

४३. जो महारथी बच्चे मास्टर नॉलेजफुल अथवा मास्टर सर्वशक्तिमान् स्थिति मे रहते है, वे नॉलेज के आधार पर हर विघ्न को हटाकर मगन अवस्था मे रह सकते है। अगर विघ्न हटते नही है तो जरूर शक्ति प्राप्त करने मे कमी है। नॉलेज ली है लेकिन उसको समाया नही है। नॉलेज को समाना अर्थात् स्वरूप बनना।

४४. अपने पुराने सस्कार जो सर्व के सहयोगी बनने मे विघ्न रूप बनते है उन सस्कारो को मिटाओ तब विघ्न समाप्त होगे। इसके लिए एक हम दूसरा बाप। तीसरी बाते देखने में आयेगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो तो सहज विघ्न खत्म हो जायेगे।

४५. अपने को कम्बाइन्ड समझो। बापदादा सेकेण्ड, सेकेण्ड का साथी है। जब से जन्म लिया है, तब से लेकर साथ है। उस साथी को सदा साथ रखो तो विघ्न ठहर नही सकते है। सदा का साथ ऐसा हो जो कोई भी कभी इस साथ को तोड न सके। फिर दोनो की लगन मे माया विघ्न डाल नही सकती है।

४६. किसी भी प्रकार के विघ्नो से सेफ रहने का सबसे अच्छा साधन है - अन्तर्मुखी अर्थात् अन्डरग्राउन्ड हो जाओ। इससे, एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा - एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढगी, तीसरा कोई भी माया के विघ्नो से सेफ हो जायेगे।

४७. आत्मा रूपी नेत्र पावरफुल और क्लीयर हो जिससे आने वाले विघ्न की महसूसता पहले से ही हो जाए। जब इनएडवास मालूम पड जायेगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण, विघ्नो मे सफलता पा लेगे। कभी भी हार नही होगी।

४८. कोई भी समस्या वा विघ्न अथवा सरकमस्टॉस पर विजयी बनने के लिए आपका हर सकल्प, हर कर्म युक्तियुक्त, राजयुक्त, रहस्ययुक्त हो। व्यर्थ न हो। अभी प्रेक्टिस करने वाले योगी नही लेकिन प्रेक्टिकल योगी बनो तो सब विघ्न स्वतः समाप्त हो जायेगे।

४९. स्वय को मास्टर विश्व निर्माता समझकर चलो तो माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चो के खेल समान लगेगे। जैसे छोटा बच्चा अगर बचपन के अनजानपन मे नाक, कान भी पकड ले तो जोश नही आयेगा क्योकि समझते है यह निर्दोष वा अनजान है। उनका कोई दोष दिखाई नही देगा। ऐसे ही माया भी अगर किसी आत्मा द्वारा समस्या, विघ्न वा परीक्षा पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओ को निर्दोष समझना चाहिए। माया ही उस आत्मा द्वारा अपना खेल दिखा रही है। ऐसे निर्दोष भावना होगी तो उन पर तरस व रहम आयेगा। फिर पुरूषार्थ की स्पीड ढोली नही होगी। हर सेकेण्ड मे चढती कला का अनुभव करेगे।

५०. सदा स्वय को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो तो यह रावण अर्थात् माया अथवा विघ्न मर्यादा की लकीर के अन्दर आने की हिम्मत नही रख सकते। कोई भी विघ्न अथवा तूफान, परेशानी वा उदासी आती है तो समझना चाहिओ कहाँ न कहाँ मर्यादाओ की लकीर से अपना बुध्धि रूपी पाव बाहर निकाला है।

५१. ज्ञान का भोजन खाने के बाद पहले स्वय मे समाना सीखो, फिर बाटो। खाया और बाट दिया तो अपने मे शक्ति नही रहती है। सिर्फ दान करने की खुशी रहती है लेकिन स्वय मे शक्ति नही रहती है और शक्ति न होने के कारण विघ्नो को पार कर निर्विघ्न नही बन सकते है। छोटे-छोटे विघ्न लगन को डिस्टर्ब कर देते है, इसलिए समाने की शक्ति धारण करो।

५२. अगर सदा स्वदर्शन चक चलता रहेगा तो जो अनेक प्रकार के माया के विघ्नो के चक मे आ जाते हो वह नही आयेगे। सभी चको से स्वदर्शन चक्र द्वारा बच सकते हो। तो सदैव यह देखो कि स्वदर्शन-चक चल रहा है? कोई भी प्रकार का अलकार नही है अर्थात् सर्वशक्तिया नही है तो सर्व विघ्नो से वा सर्व कमजोरीयो से मुक्ति भी नही होती है। विघ्नो से मुक्ति चाहते हो तो शक्ति धारण करो अर्थात् अलकारी रूप होकर रहो।

५३. श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करो तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेगे नही। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेगे। इसलिए चित्रो मे वरदान का हाथ, भक्तो के मस्तक पर दिखाते है। इसका

अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात बुद्धि मे सदैव श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो कोई भी विघ्न हार खिला नही सकते।

५४. मन के विघ्नो से युद्ध करने मे समय देना, यह अपने प्रति व्यर्थ समय देना हुआ। इसको आवश्यक नही, व्यर्थ कहेगे। ब्रहमा बाप ने अपना आवश्यक समय भी कल्याण प्रति दिया तो 'फोलो फादर' करो अर्थात् अब अपने प्रति समय नही लगाओ। सदा चेक करो कि सदा ही अपना समय और सकल्प विश्व-कल्याण प्रति लगाते है। तब कहेगे बाप समान विश्व कल्याणी वा विघ्न-विनाशक।

५५. जो सदैव मिलन मे मगन रहते है, उनके सामने कोई भी विघ्न ठहर नही सकता है। मिलन विघ्न को हटा देता है, वह विघ्न-विनाशक होते है। यदि बार-बार कोई विघ्न आता ह तो इससे सिद्ध है कि सदा मिलन मेला नही मनाते हो।

५६. विघ्नो का निवारण करने के लिए निर्णय शकित को बढ ओ, इसके लिए बापदादा के हर कर्तव्य वा चरित्रो की कसौटी को सामने रखो। जो भी कर्म वा सकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है? व्यर्थ है वा समर्थ है? तो जो भी कर्म करेगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा। इस कसौटी को साथ नही रखते हो, इसलिए विघ्नो से मुक्ति नही मिलती है।

५७. सदा अधिकारी बनकर चलो तो कोई भी विघ्नो के अधीन नही सकते। इस प्रकृति के अधीन नही बनना है। जैसे बाप प्रकृति को अधीन कर आते है, अधीन नही होते। वैसे ही इस देह वा प्रकृति के अधीन होने से ही अनेक विघ्न आते है, इसलिए अधीन करके चलो न कि अधीन होकर।

५८. कोई भी माया के सूक्ष्म वा स्थूल विघ्न आते है वा माया का वार होता है तो एक सेकेन्ड मे अपनी श्रेष्ठ शान मे स्थित हो जाओ इससे माया दुश्मन पर ठोक निशाना लगा सकेगे। कोई क्या भी करे, कोई आपके लिए विघ्न रूप बने, अपकार करे तो भी आपका भाव सदा शुभचितकपन का हो तब कहेगे, विघ्न विनाशक।

५९. बाप का बनने के साथ-साथ जो व्रत धारण किये है, उन्हे सदा स्मृति मे रखो। स्मृति से वृत्ति चचल नही होगी। वृत्ति चचल नही होगी तो प्रवृत्ति की परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नो के वश नही होगे। अगर कोई भी विघ्न आता है और उसके वशीभूत हो जाते हो तो गोया वियोगी बनने हो। विघ्न, योगयुक्त अवस्था को समाप्त कर देते है इसलिए वियोगी नही बनो। व्रत को सदा स्मृति मे लाओ।

६०. योग की शक्ति द्वारा अपने पिछले सस्कारो का बीज खत्म कर दो तो कोई भी सस्कार अथवा नेचर विघ्न रूप नही बनेगी। यदि कोई भी बात विघ्न रूप बनती है तो उस बात को परिवर्तन करने की युक्ति सीख लो। परिवर्तन कर देने से परिपक्वता आ जायेगी फिर कभी विघ्नो से हार नही खायेगे।

६१. जो विघ्न आया है, वह समय प्रमाण जायेगा भी जरूर लेकिन समय से पहले आपने परिवर्तन की शक्ति से परिवर्तन कर लिया तो उसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी।

इसलिए यह भी नही सोचना कि जो आया है वह आपेही चला जायेगा वा इस आत्मा का जितना हिसाब-किताब होगा वह पूरा हो ही जायेगा वा समय आपेही सभी को सिखला देगा। नही, मै करूगा, मै पाऊगा। इसलिए विघ्न-विनाशक बन लगन मे मगन रहना। लगन से विघ्न भी अपना रूप बदल लेगे। विघ्न, विघ्न नही अनुभव होगे लेकिन विघ्न विचित्र अनुभवी-मूर्त बनाने के निमित्त बने हुए दिखाई देगे। बडी बात, छोटी-सी अनुभव होगी।

६२. अपने जीवन मे आने वाले विघ्न वा परीक्षाओ को पास करना - वह तो बहुत कॉमन है, लेकिन जो विश्व-महाराजन् बनने वाले है उनके पास इतना स्टॉक भरपूर होगा जोकि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। ऐसी आत्माये याद की वा लगन की अग्नि को ऐसा प्रज्जवलित करेगी वा ऐसा अव्यक्त वातावरण बनायेगी जो ब्राह्मण परिवार की सर्व आत्माओ के सब प्रकार के विघ्न सहज समाप्त हो जाये।

६३. बापदादा के नयनो मे ऐसे समाये हुए रहो जो कोई भी परिस्थिति व प्रकृति अर्थात् पाँच तत्व विघ्न रूप न बन सके। लगन को ऐसा अग्नि का रूप बनाओ जिस अग्नि मे सर्व व्यर्थ सकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने सस्कार रूपी विघ्न सहज ही भस्म हो जाए।

६४. जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, वैसे अपना शक्तिशाली रूप बना लो। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ ऐसा अभ्यास करो, तब विघ्नो पर विजय हो सकेगी।

६५. मै पन और मेरे पन के कारण जो विघ्न पडते है, उन्हे समाप्त करने के लिए 'अनेक मेरे मेरे' को 'एक मेरा बाबा' मे बदल दो। और जब 'मै पन' आये तो यह एक शब्द याद रखो कि म निमित्त हूँ। निमित्त बनने से निराकारी, निरहकारी और नम्रचित, निःसकल्प अवस्था मे रह सकेगे।

६६. कोई कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बडे रूप की समस्या हो लेकिन आप अपनी ऊची स्टेज पर स्थित रहो तो वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बडी वा विकराल बात अनुभव नही होगी। जैसे ऊची पहाडी पर खडे होकर नीचे की कोई भी चीज देखो तो बडी चीज भी छोटी नजर आती है, बडे से बडा कारखाना भी एक मॉडल सा दिखाई पडता है। ऐसे ऊची स्थिति में स्थित रहो तो सब विघ्न सहज पार कर लेगे।

६७. महावीर वह है जो विघ्नो मे घबराने के बजाए, विघ्न-विनाशक बने। इसके लिए गाली देने या दुःख देने वाली आत्मा को भी अपने रहमदिल स्वरूप से, रहम की दृष्टि से देखो। ग्लानि की दृष्टि से नही। वह गाली दे, आप फूल चढाओ, तब कहेगे पुण्य आत्मा। ग्लानि वाले को दिल से गले लगाओ क्योकि यह ग्लानि की दुःख देने वाली बाते ही विघ्न रूप बनती है। तो मुझे दुःख देना तो है ही नही, लेकिन लेना भी नही है।

६८. अब हर एक को यही विशेष लक्ष्य रखना है कि "कोई भी विघ्न मे वा कोई भी कार्य मे मेहनत न लेकर और ही अन्य आत्माओ को भी निर्विघ्न तथा हर कार्य मे मददगार बनाते सहज ही सफलता-मूर्त बनेगे और बनायेगे।"

विघ्नो में अपनी स्थिति एकरस रखने के उपाय

१. जब कोई पेपर बनकर विघ्न डालते है तो ये नही सोचो कि मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नो के अनुभव मेरे पास ही आने है क्या ! वेलकम करो, आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर (हथौडी) से ही तो उसे ठोक ठोक करके ठीक करते है। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिग न्यु। ये विघ्न भी खेल है।

२. विघ्नो का काम है आना और आपका काम है विजय प्राप्त करना। जब विघ्न अपना कार्य अच्छी तरह से कर रहे है तो आप मास्टर सर्वशवितमान् अपने विजय के कार्य मे सदा सफल रहो। लक्ष्य रखो कि अब ऐसी कमाल करनी है जो हर स्थान विजयी अर्थात् निर्विघ्न हो। विघ्न आयेगे लेकिन हार नही होनी चाहिये। तो जहाँ विजय है, वहाँ विघ्न टिक नही सकता है।

३. सदा प्राप्तियाो की स्मृति से, सन्तुष्ट आत्मा बनो तो कभी किसी भी विघ्न से तग नही होगे। सम्बन्ध मे भी कोई खिटखिट नही होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नही आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरजन का साधन बन जायेगी क्योकि नॉलेजफुल होकर देखेगे।

४. माया के विघ्न तो ड्रामा मे महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप मे आते है। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नही होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल मे आना है।

५. हर आत्मा के अन्दर यही श्रेष्ठ शुद्ध सकल्प हो 'विजयी', निर्विघ्न का अर्थ यह नही कि विघ्न आए ही नही विघ्न तो हर कल्प आये है लेकिन विघ्नो मे रूकने वाले नही। विघ्न विनाशक बनने वाले है, यह स्मृति रहे। जो हर कल्प के अनुभवी है, उनको रिपीट करने मे क्या मुश्किल! अनेक बार पार कर चुके है अब सिर्फ रिपीट कर रहे है।

६. कैसी भी परिस्थाित आ जाए, कितना भी बडा विघ्न आ जाए लेकिन खुशी नही जाए। विघ्न आया है तो चला जायेगा। लेकिन अपनी चीज क्यो चली जाए ! वह आया, वह जाए। आने वाला जायेगा या रहने वाला भी चला जायेगा? तो खुशी अपनी चीज है। बाप का वर्सा हे। इसलिए जब भी विघ्न आये तो यही सोचो कि यह आया है, जाने के लिए। कोई घर का मेहमान आता है तो ऐसे नही, मेहमान होकर आया और सारी चीजे लेकर जाये। घ्यान रखेगे ना। तो विघ्न आया और चला जायेगा लेकिन आपकी खुशी नही ले जाये।

७. सदा समृति स्वरूप रहो तो स्मृति के आधार पर समर्थ स्थिति बनने से पस्थितिया एक खेल अनुभव होगी, उसमे घबरायेगे नही क्योकि यह परिस्थितिया मजिल पर पहचने के

लिए रास्ते के साइड सीन्स है अर्थात् रास्ते के नजारे है। साइड सीन्स तो अच्छी लगती है ना ! खर्चा करके भी साइड सीन देखने जाते है। अगर रास्ते मे साइड सीन्स न हो तो बोर हो जायेगे। ऐसे स्मृति स्वरूप, समर्थ-स्वरूप आत्मा के लिए परिस्थिति कहो, पेपर कहो, विघ्न कहो, प्रॉब्लम्स कहो, सब साइड सीन्स है। स्मृति मे रहे कि यह मजिल के साइड सीन्स अनगिनत बार पार की है। नथिगन्यु!

८. परिस्थितिया तो बदलनी ही है, बदलती ही रहेगी। लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे कभी परिस्थितियो के कारण बदल नही सकते, उनका तो गायन है बदल जाए दुनिया, न बदलेगे हम... क्योकि निश्चय के जो भी आधार अब तक खडे है, वह सब आधार निकलने ही है। लेकिन नीव मजबूत है तो विघ्न अथवा परिस्थितिया उन्हे जरा भी हिला नही सकती।

९. ऊची मजिल पर पहुँचने के लिए जो रास्ता तय कर रहे हो इसमे अनेक प्रकार के विघ्न तो आने ही है लेकिन उन विघ्नो को पार करने के लिये पहले चाहिए परखने की शक्ति। फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति। जब निर्णय कर लेगे कि यह माया है वा अयथार्थ है। इसमे फायदा है वा नुकसान? अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है? जब यथार्थ निर्णय कर लेगे तो स्थिति एकरस रहेगी।

१०. जो शुरवीर बच्चे है वे अपना समय विघ्नो मे नही, लेकिन सर्विस मे लगाते है। अब पुरूषार्थ मे बचपन न हो। कैसी भी परिस्थिति हो, कितना भी बडा विघ्न हो, वायुमण्डल कैसा भी हो लेकिन कमजोर नही बनो तब कहेगे शुरवीर। शुरवीर पर किसी भी विघ्न का असर पड नही सकता है।

११. ईश्वरीय स्नेह और सहयोग का यादगार बनाओ। जितना एक दो के स्नेही, सहयोगी बनेगे उतना माया के विघ्न हटाने मे सहयोग मिलता रहेगा। सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। परिवार मे आत्मिक स्नह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब ठीक हो तो विघ्नो मे एकरस रह सकेगे।

१२. कोई भी विघ्न आवे लेकिन ज्यादा समय न चले। आया और गया यह है शक्ति रूप की निशानी। मन्सा, वाचा, कर्मणा मे आई हुई समस्याओ या विघ्नो के ऊपर विजयी बनने का लक्ष्य हो तो विजय माला में आ जायेगे।

१३. कोई भी प्लैन को प्रैक्टिकल मे लाने तक अनेक प्रकार के विघ्न तो आयेगे ही। लेकिन उसके लिए पहले से तैयारी चाहिए। जिस बात की आवश्यकता समझी जाती है, उसका प्रबन्ध भी पहले से किया जाता है। ऐसे विघ्नो को समाप्त करने के लिए पहले से ही प्रबन्ध करो। युवितया रचो ताकि समय व्यर्थ न जाये।

१४. जब कोई भी ड्रिल शुरू करते है तो पहले-पहले जब थोडा दर्द महसूस होता है लेकिन अभ्यास होने के बाद ड्रिल करने के सिवाए रह नहीं सकते। यहाँ भी बुद्धि की ड्रिल शुरू करते हो तो अभ्यास न होने के कारण मुश्किल लगता है अथवा माथा भारी होता है। कई प्रकार के विघ्न आते है। लेकिन अभ्यासी बनने से सब विघ्न स्वतः खत्म हो जायेगे।

१५. यदि कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनते है तो उसके प्रति घृणादृष्टि, व्यर्थ सकल्पो की उत्पति नही होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। अगर यह दृष्टि रखो तो आप की श्रेष्ठ दृष्टि हो जायेगी। कोई कैसा भी हो, लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति सदैव शुभचिन्तक की हो और कल्याण की भावना हो। हर बात मै कल्याण दिखाई दे तो सामने वाला भी बदल जायेगा।

१६. जब कोई भी विघ्न पडता है तो उसको समाप्त करने मे जो समय खर्च करते हो या जो ज्ञान धन खर्च करते हो वह हुआ स्वय के प्रति खर्च, अब उस खर्चे को बचाओ। इसके लिए रोज अमृतवेले बापदादा से अमरभव का वरदान लो तो सारा दिन कोई भी विघ्नो मे मुरझायेगे नही। सदा हर्षित वा एकरस रहने मे वा सदा शक्तिशाली बनने मे अमर रहेगे।

१७. बुद्धि मे रहे कि अब स्वय को विघ्नपफ रहना है। स्वय मे मन्सा का भी कोई विघ्न न हो। जैसे युद्ध के मैदान मै यदि कोई महारथी अपने रथ अर्थात् सवारी के वश हो जाए तो वह विजयी नही बन सकता है, ऐसे कभी भी देह-अभिमान के वश हो, विघ्न रूप नही बनना है।

१८. विघ्न आया और एक सेकेण्ड मे चला गया, यह भी महारथियो की स्टेज नही है। महारथी तो विघ्न को आने ही नही देगे अर्थात् एक सेकेण्ड भी उसमे वेस्ट नही करेगे। कोई भी समस्या या आने वालो परीक्षा को आने से पहले ही कैच कर, स्वय को सेफ कर लेगे। जैसे आजकल साइस इतनी रिफाइन होती जा रही है जो सब बातो का पता पहले से ही पड जाता है और आने के पहले ही सेफ्टी के साधन अपना लेते है। ऐसे रिफाइन स्टेज का पुरूषार्थ तब कहा जायेगा, जब विघ्न को आने ही न दो अर्थात् एक सेकण्ड भी उसमे व्यर्थ न जाये। इसके लिए योगयुक्त और युक्ति-युक्त बनो।

१९. विघ्न आता है, तो विशेष योग लगाते हो, इससे सिद्ध होता है कि दुश्मन ही शस्त्र की स्मृति दिलाते है। लेकिन दुश्मन आवे ही नही, समस्या सामना ही न कर सके उसके लिए स्वतः और सदा स्मृति-स्वरूप बनो। सूली से काटा बनना यह फाइनल स्टेज नही है। काटे को दूर से ही योगाग्नि मे समाप्त कर देना यह है फाइनल स्टेज।

२०. विघ्नो को देख अपनी स्टेज से नीचे नही आओ, कोई भी तूफान, बुद्धि मे तूफान पैदा न करे क्योकि तूफान, तूफान नही तोहफा है। जो तूफान को तूफान समझते है वो हलचल मे आते है और जो तोहफा समझते है, वह हुल्लास मे रहते है। चढती कला की अनुभूति करते है। उनकी हिम्मत कम नही हो सकती है।

२१. अगर कोई बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह भी फाइनल स्टेज नही है। ऐसा तो होना नही चाहिए.... अगर ऐसा सकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता है तो इसको भी अश-मात्र की हलचल का रूप कहेगे। क्यो-क्या का क्वेश्चन उठना माना हलचल। विघ्न विनाशक आत्माये हलचल मे भी नही आ सकती।

२२. जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति मे जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओ के सामने अब परीक्षाये व विघ्न भी अति के रूप में आयेगे। लेकिन नथिगन्यु की

स्मृति से सदा हर्षित रहने वाले ही पास हो सकेगे। इसलिये आश्चर्य नही खाना ह कि पहले यह नही था अब क्यो है? यह आश्चर्य भी नही। फाइनल पेपर मे आश्चर्यजनक बाते क्वेश्चन के रूप मे आयेगी तब तो पास और फेल हो सकेगे। लेकिन बुद्धि मे रहे कि यह विघ्न आना आवश्यक है, नथिगन्यु, तब सदा हर्षित रहेगे।

२३. मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी हूँ सदा इसी पोजीशन मे स्थित रहकर हर कर्म करो तो यह पोजीशन माया के हर विघ्न से परे, निर्विघ्न बनाने वाली है। जैसे कोई लौकिक रीति मे भी जब कोई अथॉरिटी वाला होता है, तो उनके आगे कोई भी सामना करने की हिम्मत नही रखते है।

२४. विघ्नो का आना यह भी ड्रामा मे आदि से अन्त तक नृध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते है और आप अभी तो अनुभवी हो ही गये हो इसलिए विघ्न भी खेल लगता है। जैसे फुटबाल का खेल करते हो तो बॉल आता है और ठोकर लगाते हो। यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने मे तो मजा आता है ना। कोशिश करते हो कि बॉल मेरे पाव मे आये तो मे लगाऊ। तो यह खेल होता रहेगा। नथिगन्यु। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है यही ब्राह्मण कुल की रीति रस्म है।

ओम् शान्ति.... शान्ति.... शान्ति....